मत्ती ईसोपदेश 8 : 1 - 3

एक कोढ़ी यीशु के पास आया और उनके सामने झुक गया। उसने कहा "महोदय, अगर आप चाहें, तो आप मुझे ठीक कर सकते हैं।" यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा "निश्चय ही मैं तुम्हें ठीक करना चाहता हूँ! ठीक हो जाओ!" और तुरंत ही उसका कोढ़ ठीक हो गया।

जिसने भी उनसे उपचार की मांग की यीशु ने कभी किसी को "ना" नही कहा। जिसने भी उनसे उपचार की मांग की उन्होंने उसे ठीक कर दिया। जिसका मतलब यह है कि वह मुझे अच्छा करना चाहते थे।

एक बार भी यीशु ने यह नहीं कहा था "यह रोग तुम्हारा क्रूस है और इसे तुम्हें बहादुरी के साथ उठाना ही है।" बल्कि, यीशु ने जैसे माता पिता अपने बच्चों मे किसी रोग को मानते हैं वैसे ही रोग को माना : जल्दी से जल्दी कुछ तो उस पर काबू पाएं, कुछ तो उपचार हो। क्या कोई माता पिता कभी भी चाहेगें के उनके बच्चे बीमार हों? हमलोग एक बड़ी गलती करेंगे अगर हम यह सोचते है कि परमेश्वर कभी भी यह चाहता की कोई भी बीमार हो। परमेश्वर, एक अच्छे माता पिता की तरह होते हैं, जो अपने बच्चे को हमेशा स्वस्थ देखना चाहते है!